



1061CH05

चतुर्थः पाठः

जननी तुल्यवत्सला

प्रस्तुतः पाठः महर्षिवेदव्यासविरचितस्य ऐतिहासिकग्रन्थस्य महाभारतस्य “वनपर्व” इत्यतः गृहीतः। इयं कथा सर्वेषु प्राणिषु समदृष्टिभावनां प्रबोधयति। अस्याः अभीप्सितः अर्थोऽस्ति यत् समाजे विद्यमानान् दुर्बलान् प्राणिनः प्रत्यपि मातुः वात्सल्यं प्रकर्षणैव भवति।

कश्चित् कृषकः बलीवर्दाभ्यां क्षेत्रकर्षणं कुर्वन्नासीत्। तयोः बलीवर्दयोः एकः शरीरेण दुर्बलः जवेन गन्तुमशक्तश्चासीत्। अतः कृषकः तं दुर्बलं वृषभं तोदनेन नुदन् अवर्तत। सः ऋषभः हलमूढ्वा गन्तुमशक्तः क्षेत्रे पपात। क्रुद्धः कृषीवलः तमुत्थापयितुं बहुवारम् यत्नमकरोत्। तथापि वृषः नोत्थितः।

भूमौ पतितं स्वपुत्रं दृष्ट्वा सर्वधेनूनां मातुः सुरभेः नेत्राभ्यामश्रूणि आविरासन्। सुरभेरिमामवस्थां दृष्ट्वा सुराधिपः तामपृच्छत्—“अयि शुभे! किमेवं रोदिषि? उच्यताम्” इति। सा च



विनिपातो न वः कश्चिद् दृश्यते त्रिदशाधिपः॥

अहं तु पुत्रं शोचामि, तेन रोदिमि कौशिकः॥

“भो वासव! पुत्रस्य दैन्यं दृष्ट्वा अहं रोदिमि। सः दीन इति जानन्नपि कृषकः तं बहुधा पीडयति। सः कृच्छ्रेण भारमुद्धहति। इतरमिव धुरं वोढुं सः न शक्नोति। एतत् भवान् पश्यति न?” इति प्रत्यवोचत्।

“भद्रे! नूनम्। सहस्राधिकेषु पुत्रेषु सत्स्वपि तव अस्मिन्नेव एतादृशं वात्सल्यं कथम्?” इति इन्द्रेण पृष्टा सुरभिः प्रत्यवोचत् -

यदि पुत्रसहस्रं मे वात्सल्यं सर्वत्र सममेव मे।
दीने च तनये देव, प्रकृत्याडङ्ग्याधिका कृपा॥

“बहून्यपत्यानि मे सन्तीति सत्यम्। तथाप्यहमेतस्मिन् पुत्रे विशिष्य आत्मवेदनामनुभवामि। यतो हि अयमन्येभ्यो दुर्बलः। सर्वेष्वपत्येषु जननी तुल्यवत्सला एव। तथापि दुर्बले सुते मातुः अभ्यधिका कृपा सहजैव” इति। सुरभिवचनं श्रुत्वा भृशं विस्मितस्याखण्डलस्यापि हृदयमद्रवत्। स च तामेवमसान्त्वयत्- “गच्छ वत्से! सर्वं भद्रं जायेत।”



अचिरादेव चण्डवातेन मेघरवैश्च सह प्रवर्षः
समजायत। लोकानां पश्यताम् एव सर्वत्र जलोपप्लवः
सञ्जातः। कृषकः हर्षातिरेकेण कर्षणविमुखः सन् वृषभौ नीत्वा गृहमगात्।

अपत्येषु च सर्वेषु जननी तुल्यवत्सला।
पुत्रे दीने तु सा माता कृपार्द्रहृदया भवेत्॥

शब्दार्थः

| | | | |
|----------------|----------------------|----------------------|-----------------------|
| बलीवर्दाभ्याम् | - वृषभाभ्याम् | - दो बैलों से | - By two bullocks |
| क्षेत्रकर्षणम् | - क्षेत्रस्य कर्षणम् | - खेत की जुताई | - Plough the field |
| जवेन | - तीव्रगत्या | - तीव्रगति से | - With speed |
| तोदनेन | - कष्टप्रदानेन | - कष्ट देने से | - By torturing |
| नुदन् | - बलात् प्रथ्यन् | - धकेलता हुआ | - Pulling |
| हलमूढ्वा | - हलम् उत्थाप्य | - हल उठाकर, हल ढोकर- | - Carrying the plough |
| पपात | - भूमौ अपतत् | - गिर गया | - Fell down |
| कृषीवलः | - कृषकः | - किसान | - Farmer |
| उत्थापयितुम् | - उपरि नेतुम् | - उठाने के लिए | - To uplift |

| | | | |
|--------------|-----------------------------------|--|-------------------------|
| वृषः | - वृषभः | - बैल | - Bullock |
| धेनूनाम् | - गवाम् | - गायों की | - Of cows |
| नेत्राभ्याम् | - चक्षुर्भ्याम्, नयनाभ्याम्- | दोनों आँखों से | - From both eyes |
| अश्रूणि | - नयनजलम् | - आँसू | - Tears |
| आविरासना | - प्रकटिताः | - सामने आ गए | - Appeared |
| सुराधिपः | - सुराणां राजा, देवानाम् अधिपः | - देवताओं के राजा (इन्द्र)- | - King of Gods |
| उच्यताम् | - कथ्यताम् | - कहें, कहा जाए | - Say |
| वासवः | - इन्द्रः, देवराजः | - इन्द्र | - Indra |
| कृच्छ्रेण | - काठिन्येन | - कठिनाई से | - With difficulty |
| इतरमिव | - अपर इव | - दूसरे (बैल) के समान | - Like an other bullock |
| धुरम् | - धुरम् | - जुए को (गाड़ी के जुए का वह भाग जो बैलों के कंधों पर रखा रहता है) | - Yoke |
| वोढुम् | - वहनाय योग्यम् | - ढोने के लिए | - To carry |
| प्रत्यवोचत् | - उत्तरं दत्तवान् | - जवाब दिया | - Replied |
| नूनम् | - निश्चयेन | - निश्चय ही | - Certainly |
| सहस्रम् | - दशशतम् | - हजार | - Thousand |
| वात्सल्यम् | - स्नेहभावः | - वात्सल्य (प्रेमभाव) | - Affection |
| अपत्यानि | - सन्ततयः | - सन्तान | - Children |
| विशिष्य | - विशेषतः | - विशेषकर | - Specially |
| वेदनाम् | - पीडाम्, दुःखम् | - कष्ट को | - The pain |
| तुल्यवत्सला | - समस्नेहयुता | - समान रूप से प्यार करने वाली | - Equal affection |
| सुतः | - पुत्रः/तनयः | - पुत्र | - Son |
| भृशम् | - अत्यधिकम् | - बहुत अधिक | - Very much |
| आखण्डलस्य | - देवराजस्य इन्द्रस्य | - इन्द्र का | - Of Indra |

| | | | |
|-------------|-------------------------------|-----------------------------|------------------------|
| असान्त्वयत् | - सान्त्वनं दत्तवान्, | - सान्त्वना दी (दिलासा दी)- | Consoled |
| | समाश्वासयत् | | |
| अचिरात् | - शीघ्रम् | - शीघ्र ही | - Soon |
| चण्डवातेन | - वेगवता वायुना | - प्रचण्ड (तीव्र) हवा से | - With swift wind |
| मेघरवैः | - मेघस्य गर्जनेन | - बादलों के गर्जन से | - Thundering |
| प्रवर्षः | - वृष्टिः | - वर्षा | - Heavy rain |
| जलोपप्लवः | - जलस्य उपप्लवः | - पानी द्वारा तबाही | - Destruction by water |
| | (उत्पातः) | | |
| कर्षणविमुखः | - कर्षणकर्मणः विमुखः- | जोतने के काम से | - Leaving |
| | | विमुख होकर | ploughing work |
| वृषभौ | - वृषौ | - दोनों बैलों को | - Both the bullocks |
| अगात् | - गतवान्, अगच्छत् | - गया | - Went |
| त्रिदशाधिपः | - त्रिदशानाम् अधिपः=इन्द्रः,- | देवताओं का राजा=इन्द्र | - King of Gods |

अभ्यासः

1. एकपदेन उत्तरं लिखत-

- वृषभः दीनः इति जानन्नपि कः तं नुदन् आसीत्?
- वृषभः कुत्र पपात?
- दुर्बले सुते कस्याः अधिका कृपा भवति?
- कयोः एकः शरीरेण दुर्बलः आसीत्?
- चण्डवातेन मेघरवैश्च सह कः समजायत?

2. अधोलिखितानां प्रश्नानाम् उत्तराणि संस्कृतभाषया लिखत-

- कृषकः किं करोति स्म?
- माता सुरभिः किमर्थम् अश्रूणि मुञ्चति स्म?
- सुरभिः इन्द्रस्य प्रश्नस्य किमुत्तरं ददाति?

- (घ) मातुः अधिका कृपा कस्मिन् भवति?
 (ङ) इन्द्रः दुर्बलवृषभस्य कष्टानि अपाकर्तुं किं कृतवान्?
 (च) जननी कीदृशी भवति?
 (छ) पाठेऽस्मिन् कयोः संवादः विद्यते?

3. 'क' स्तम्भे दत्तानां पदानां मेलनं 'ख' स्तम्भे दत्तैः समानार्थकपदैः कुरुत-

| क स्तम्भ | ख स्तम्भ |
|-------------------|--------------------|
| (क) कृच्छ्रेण | (i) वृषभः |
| (ख) चक्षुर्भ्याम् | (ii) वासवः |
| (ग) जवेन | (iii) नेत्राभ्याम् |
| (घ) इन्द्रः | (iv) अचिरम् |
| (ङ) पुत्राः | (v) द्रुतगत्या |
| (च) शीघ्रम् | (vi) काठिन्येन |
| (छ) बलीवर्दः | (vii) सुताः |

4. स्थूलपदमाधृत्य प्रश्ननिर्माणं कुरुत-

- (क) सः कृच्छ्रेण भारम् उद्वहति।
 (ख) सुराधिपः ताम् अपृच्छत्।
 (ग) अयम् अन्येभ्यो दुर्बलः।
 (घ) धेनूनाम् माता सुरभिः आसीत्।
 (ङ) सहस्राधिकेषु पुत्रेषु सत्स्वपि सा दुःखी आसीत्।

5. रेखाङ्कितपदे यथास्थानं सन्धिं विच्छेदं वा कुरुत-

- (क) कृषकः क्षेत्रकर्षणं कुर्वन्+आसीत्।
 (ख) तयोरेकः वृषभः दुर्बलः आसीत्।
 (ग) तथापि वृषः न+उत्थितः।
 (घ) सत्स्वपि बहुषु पुत्रेषु अस्मिन् वात्सल्यं कथम्?

(ङ) तथा+अपि+अहम्+एतस्मिन् स्नेहम् अनुभवामि।

(च) मम बहूनि+अपत्यानि सन्ति।

(छ) सर्वत्र जलोपप्लवः सञ्जातः।

6. अधोलिखितेषु वाक्येषु रेखांकितं सर्वनामपदं कस्मै प्रयुक्तम्—

(क) सा च अवदत् भो वासव! अहम् भृशं दुःखिता अस्मि।

(ख) पुत्रस्य दैन्यं दृष्ट्वा अहम् रोदिमि।

(ग) सः दीनः इति जानन् अपि कृषकः तं पीडयति।

(घ) मम बहूनि अपत्यानि सन्ति।

(ङ) सः च ताम् एवम् असान्त्वयत्।

(च) सहस्रेषु पुत्रेषु सत्स्वपि तव अस्मिन् प्रीतिः अस्ति।

7. 'क' स्तम्भे विशेषणपदं लिखितम्, 'ख' स्तम्भे पुनः विशेष्यपदम्। तयोः मेलनं कुरुत—

| क स्तम्भ | ख स्तम्भ |
|------------------|---------------|
| (क) कश्चित् | (i) वृषभम् |
| (ख) दुर्बलम् | (ii) कृपा |
| (ग) क्रुद्धः | (iii) कृषीवलः |
| (घ) सहस्राधिकेषु | (iv) आखण्डलः |
| (ङ) अभ्यधिका | (v) जननी |
| (च) विस्मितः | (vi) पुत्रेषु |
| (छ) तुल्यवत्सला | (vii) कृषकः |

योग्यताविस्तारः

महाभारत में अनेक ऐसे प्रसंग हैं जो आज के युग में भी उपादेय हैं। महाभारत के वनपर्व से ली गई यह कथा न केवल मनुष्यों अपितु सभी जीव-जन्तुओं के प्रति समदृष्टि पर बल देती है। समाज में दुर्बल लोगों अथवा जीवों के प्रति भी माँ की ममता प्रगाढ़ होती है, यह इस पाठ का अभिप्रेत है। प्रस्तुत पाठ्यांश महाभारत से उद्धृत है, जिसमें मुख्यतः व्यास द्वारा धृतराष्ट्र को एक कथा के माध्यम से यह संदेश देने का प्रयास किया गया है कि तुम पिता हो और एक पिता होने के

नाते अपने पुत्रों के साथ-साथ अपने भतीजों के हित का खयाल रखना भी उचित है। इस प्रसंग में गाय के मातृत्व की चर्चा करते हुए गोमाता सुरभि और इन्द्र के संवाद के माध्यम से यह बताया गया है कि माता के लिए सभी सन्तान बराबर होती हैं। उसके हृदय में सबके लिए समान स्नेह होता है। इस कथा का आधार महाभारत, वनपर्व, दशम अध्याय, श्लोक संख्या 8 से श्लोक संख्या 16 तक है। महाभारत के विषय में एक श्लोक प्रसिद्ध है,

धर्मं अर्थं च कामे च मोक्षे च भरतर्षभा।

यदिहास्ति तदन्यत्र यन्नेहास्ति न तत् क्वचित्॥

अर्थात्- धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष इन पुरुषार्थ-चतुष्टय के बारे में जो बातें यहाँ हैं वे तो अन्यत्र मिल सकती हैं, पर जो कुछ यहाँ नहीं है, वह अन्यत्र कहीं भी उपलब्ध नहीं है।

उपरोक्त पाठ में मानवीय मूल्यों की पराकाष्ठा दिखाई गई है। यद्यपि माता के हृदय में अपनी सभी सन्ततियों के प्रति समान प्रेम होता है, पर जो कमजोर सन्तान होती है उसके प्रति उसके मन में अतिशय प्रेम होता है।

मातृमहत्त्वविषयक श्लोक-

नास्ति मातृसमा छाया, नास्ति मातृसमा गतिः।

नास्ति मातृसमं त्राणं, नास्ति मातृसमा प्रिया॥

- वेदव्यास

उपाध्यायान्दशाचार्य आचार्येभ्यः शतं पिता।

सहस्रं तु पितृन् माता, गौरवेणातिरिच्यते॥

- मनुस्मृति

माता गुरुतरा भूमेः, खात् पितोच्चतरस्तथा।

मनः शीघ्रतरं वातात्, चिन्ता बहुतरी तृणात्॥

- महाभारत

निरतिशयं गरिमाणं तेन जनन्याः स्मरन्ति विद्वांसः।

यत् कमपि वहति गर्भे महतामपि स गुरुर्भवति॥

भारतीय संस्कृति में गौ का महत्त्व अनादिकाल से रहा है। हमारे यहाँ सभी इच्छित वस्तुओं को देने की क्षमता गाय में है, इस बात को कामधेनु की संकल्पना से समझा जा सकता है। कामधेनु के बारे में यह माना जाता है कि उनके सामने जो भी इच्छा व्यक्त की जाती है वह तत्काल फलवती हो जाती है।

काले फलं यल्लभते मनुष्यो
न कामधेनोश्च समं द्विजेभ्यः॥

कन्यारथानां करिवाजियुक्तैः
शतैः सहस्रैः सततं द्विजेभ्यः॥

दत्तैः फलं यल्लभते मनुष्यः
समं तथा स्यान् न तु कामधेनोः॥

गाय के महत्त्व के संदर्भ में महाकवि कालिदास के रघुवंश में, सन्तान प्राप्ति की कामना से राजा दिलीप द्वारा ऋषि वशिष्ठ की कामधेनु नन्दिनी की सेवा और उनकी प्रसन्नता से प्रतापी पुत्र प्राप्त करने की कथा भी काफी प्रसिद्ध है। आज भी गाय की उपयोगिता प्रायः सर्वस्वीकृत ही है।

एकत्र पृथिवी सर्वा, सशैलवनकानना।
तस्याः गौर्यायसी, साक्षादेकत्रोभयतोमुखी॥

गावो भूतं च भव्यं च, गावः पुष्टिः सनातनी।
गावो लक्ष्म्यास्तथाभूतं, गोषु दत्तं न नश्यति॥

